श्रद्धाञ्जलि

फूल खिलते हैं मुरझाने के लिए तो फिर खिलते ही क्यों हैं? लोग मिलते हैं बिछुड़ जाने के लिए तो फिर मिलते ही क्यों हैं?

इस प्रश्न का उत्तर यही है कि बस यही विधाता की मर्जी है। इस धरती के लाल, भारत माँ के सच्चे सपूत आदरणीय भाई राजीव जी, जो देश को पूर्ण स्वस्थ, समर्थ, भ्रष्टाचार से मुक्त और पूर्णरूपेण भारतीय आदर्शों जीवन मूल्यों व मर्यादाओं से युक्त जन-जन को स्वदेशी विचारधारा व आचरण से युक्त देखना चाहते थे, बिना देखे ही क्यों उस परमधाम को लौट गए? ऐसी भी क्या जल्दी थी उन्हें? एक ही उत्तर है यही विधान था उस विधाता का। उनके आकस्मिक निधन पर लाखों-लाखों राष्ट्रभक्त भाई-बहनों की आँखों में गम के आँसू हैं। सब उन्हें अपनी श्रद्धाञ्जलि भेज रहे हैं पर मैं समझती हूँ कि वे एक-एक श्वास राष्ट्रहित के लिए बिना थके पूरी ईमानदारी व पूर्ण पुरुषार्थ के साथ जीते थे। सादगी, पवित्रता, निरंहकारिता, विद्वता, निष्कलंकता, गुरुभक्ति, पितृभक्ति व राष्ट्रभक्ति में तो वे प्रथम स्थान पर थे ही, भारत स्वाभिमान आंदोलन में शहादत में भी वे प्रथम स्थान पर हो गए। वे गऊमाता और मातृशक्ति से विशेष प्रेम करते थे।

अतः मुझे लगता है वे उन्हीं भाई-बहनों की श्रद्धाञ्जलि स्वीकार करेंगे जो उन्हीं की भाँति अपने जीवन में आचरण करेंगे। समस्त देश से बहनों के दूरभाष मेरे पास शोक-सन्देश के रूप में श्रद्धाजञ्लि के रूप में आ रहे हैं। लेकिन देश की लगभग 12 लाख बहनों से मेरा आह्वान है कि वे भाई राजीव जी के अधूरे छोड़े काम को पूरा करने के लिए वैसी ही सच्चाई-ईमानदारी व पूर्ण पुरुषार्थ से इस भारत स्वाभिमान के कार्य में लगें यही उनके चरणों में सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

यह संस्था और समूचा राष्ट्र राजीव भाई के योगदान को सदैव स्मरण रखेगा। उनके चरणों में समस्त राष्ट्रवासी बहनों की ओर से शत्-शत् नमन !

भवदीयाः

(आचार्या बहन सुमनाः)
मुख्य केन्द्रीय प्रभारी
पतंजलि योग समिति